सिम्मी हर्षिता का कथा- साहित्य: नारी जीवन संघर्ष

SIMMI HARSHITA KA KATHA- SAHITYA: NARI JEEVAN SANGARSH

मंगलूर विश्वविद्यालय

की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की

संक्षेपिका

FINAL SYNOPSIS

SUBMITTED TO

MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

शोध निर्देशिका

डॉ.नागरत्ना.एन.राव

एसोसिएट प्रोफेसर,स्नातक विभागाध्यक्ष
एवं प्राध्यापक हिन्दी स्नातकोत्तर
अध्ययन विभाग
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूर
मंगलूर - 575001

शोधार्थी

वैशाली सालियन

नामांकन संख्या : 154968533
हिन्दी विभाग
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूर
मंगलूर - 575001

Research Guide
Dr.NAGARATNA N RAO
Associate Professor & HOD
Department of Hindi
University College Mangalore
Mangalore - 575001

Researcher
Vaishali Salian
Reg.No.154968533
Department of Hindi
University College Mangalore
Mangalore - 575001

स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग

विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूर

मंगलूर विश्वविद्यालय

DEPARTAMEMT OF POST GRADUATE & RESEARCH IN HINDI

UNIVERSITY COLLEGE , MANGALORE

MANGALORE UNIVERSITY

2021

प्रस्तावना

समाज, साहित्य और संस्कृति के भीतर नारी वर्षो से संघर्षरत है। पितृसत्तात्मक मूल्य स्त्री को समाज में दोयम दर्जे का मानते है। जिसके कारण उनके मानवीय मूल्यों एवं अधिकारों का हनन होता है। नारी की शारीरिक संरचना भले ही पुरुषों से भिन्न हो परंतु उसमें वे सभी शक्तियाँ है जो पुरुषों में पाई जाती है। पारिवारिक और सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिस्थितियाँ, संस्कार व मूल्य सब मिलकर नारी की मानसिकता को निर्धारित करते हैं। जिसके कारण वह सदियों से जुल्म और शोषण का शिकार बनती रही। इन शोषणों के विरुद्ध उसका संघर्ष बहुस्तरीय है। आधुनिक काल में स्त्रियों की परिस्थितियों में भले ही परिवर्तन आया हो फिर भी वह पुरुष के अधीनस्थ है। उन्हें बराबरी का दर्जा कभी नहीं मिला। वह विशुद्ध रूप से एक 'जाति' बन कर रह गई है। 'वर्ग' की श्रेणी में उन्हें रखा ही नहीं गया। नारी की इस दशा पर कई साहित्यकारों ने भिन्न दिशाओं पर अपनी लेखनी चलायी।

महिला कथाकारों ने इन्हीं से प्रेरित होकर अपने साहित्य के माध्यम से नारी की पीड़ा, अस्मिता और उसकी संघर्षमयता का यथार्थ चित्रण किया है, जो पुरुष मानसिकता को चुनौती देता है। हिन्दी महिला लेखन के क्षेत्र में सिम्मी हर्षिता का अपना एक स्थान है। जिन्होंने नारी जीवन की पीड़ा और उसके संघर्ष की अभिव्यक्ति अपने कथा साहित्य में की है। उन्होंने नारी जीवन के हर पहलुओं को बारीकी से जाँचा और उसे कलात्मक रूप से अपनी रचनाओं में यथार्य के साथ पिरोया। सिम्मी जी ने अपने साहित्य में नारी मन की अंतरंग गाथा, विड़म्बनाओं-विसंगतियों को बड़े ही सहज ढ्रग से खींचकर बाहर निकाला है। अपनी इसी विशेषता के कारण वे समकालीन कथा लेखिकाओं के बीच अपनी जगह बना पाई। किसी भी चरित्र को सृजित करने से पहले वे अपने पात्रों बड़े-छोटे दुखों को स्वानुभूत करती हैं तभी मानव मन की अनछुई भावनाएँ चित्रित हो पाई।

शोध विषय चयन के महत्त्व एवं उद्देश्य

नारी का अस्तित्व विभिन्न पहलुओं से जुड़ा है। उसका संघर्षमय जीवन कालजयी सत्य है। एक स्त्री होने के नाते मेरी यही इच्छा थी कि नारी जीवन के अंतर्द्वंद्वों को समझूँ। उसके संघर्ष के प्रत्येक पहलुओं को जानने की जिज्ञासा मेरे अन्दर घर कर गई थी। पितृसत्तात्मक मानसिकता व सामज की दोहरी नीति में जकड़ी स्त्री के अस्तित्व व अस्मिता की लड़ाई को मुझे जानना था। मुझे ऐसी लेखिका की तलाश थी जिनका कथा साहित्य नारी जीवन संघर्षों की गहरी पड़ताल करती हो। कुछ प्रसिद्ध लेखिकाओं को पढ़ने के दौरान सिम्मी जी का नाम मेरे मन-मस्तिष्क में छा गया। जब मैंने उनकी कहानियाँ और उपन्यासों में नारी विषय संघर्षों को पढ़ा तो तुरंत मैंने निश्चय किया कि उनके कथा साहित्य को अपना शोध विषय बनाऊँगी। मेरी शोध निर्देशिका ने मेरी जिज्ञासा देखकर सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य में नारी जीवन संघर्ष विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति दी। सिम्मी जी की कुल अड़तीस कहानियाँ व पाँच उपन्यास है। मेरा शोध कार्य सिम्मी हर्षिता के कथा साहित्य में नारी के जीवन संघर्षों के विभिन्न स्तरों को व्यक्त करता है।

सिम्मी हर्षिता के स्त्री पात्र अपनी शक्ति को जानते है। वे अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है। उपन्यास 'जलतंरग' की सोहना व 'कब्रगाथा' कहानी की दिशा ने अपनी बदलती सोच से अपने अस्तित्व को नयी पहचान दिलवायी। सिम्मी जी ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक स्तरों पर संघर्ष करने वाले स्त्री पात्रों की सोच को समझा और उनका चित्रण किया। इनकी रचनाओं की स्त्रियाँ केवल निजी स्वार्थ के लिए संघर्ष नहीं करती बल्कि सामूहिक संघर्ष के लिए भी तत्पर हैं। मेरा शोध **'सिम्मी हर्षिता का कथा- साहित्य : नारी जीवन संघर्ष'** एक मौलिक शोध कार्य है। स्त्री की पराधीनता का मुख्य कारण

पुरुषवादी सोच है। मेरे शोध कार्य का उद्देश्य पुरुषों की परम्परागत सोच में बदलाव लाना । इस बदलाव से ही सही मायने में नारी अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकेंगी।

दूसरी ओर अपने इस शोध-कार्य से यदि मैं नारी जीवन से सम्बन्धित उनके संघर्ष क्षेत्रों में जागरूकता ला सकी तो मेरा यह सत्प्रयास सार्थक होगा। अतः सिम्मी जी के कथा-साहित्य के माध्यम से नारी जीवन संघर्ष की सही परख व उनमें जागरूकता लाना ही मेरे शोध-कार्य का उद्देश्य है।

शोध विषय की सीमा एवं व्याप्ति

ज्ञान के क्षेत्र में शोध निरंतर जारी रहता है। शोध ज्ञान की किसी सीमा तक पहुँच कर रुक नहीं जाता, वह आगे बढ़ता जाता है। यह ज्ञान विस्तार का साधन है यह हमें अज्ञात से ज्ञात की ओर ले जाता है। जिसमें तार्किक और समीक्षा की दृष्टि मिलती है। सिम्मी हर्षिता की कुल अड़तीस कहानियाँ और पाँच उपन्यास है। इनके कथा साहित्य में स्त्री संघर्ष के विविध पक्षों को समेटने की कोशिश की गई है। उन्होंने अजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लिया था। अतः विवाह के प्रति अपने नये दृष्टिकोण उठा कर साहासिक कदम उठाया। उनके कथा साहित्य में स्त्री पुरुषों के समक्ष ऐसे प्रश्नों को उठाती है कि स्वयं पाठकगण सोचने को विवश हो जाता है। इनकी कहानियों में नारी के जीवन संघर्षों को बारीकी से चित्रित किया गया है। सिम्मी जी के कथा साहित्य का अध्ययन करना ही शोधकार्य की सीमा एवं व्याप्ति है। मैंने केवल उन्हीं कहानियों का चयन किया जिसमें नारी के जीवन का संघर्ष परिलक्षित हुआ है। इनके साहित्य का अवलोकन करने से यह ज्ञात हुआ कि नारी मानव समाज की जननी और दो पीढ़ियों को जोड़ने वाली कड़ी है। जो अपने जिम्मेदारियों के तहत इतना दबा दी गई कि वे अपने लिए कुछ सोच ही नहीं पाती। उनके पाँचो उपन्यास स्त्री की पीड़ा व संघर्ष को अभिव्यक्त करते है। इसलिए मैंने इनके कथा साहित्य में स्त्री के जीवन संघर्ष को ही चुना ताकि मैं विषय के साथ न्याय कर सकूँ और अपने शोध को सही दिशा दे सकूँ।

पूर्ववर्ती शोध कार्य

सिम्मी हर्षिता की रचनाओं पर मुझे केवल दो शोध ही प्राप्त हुए हुए है। दोनों पीएच.डी. की उपाधियाँ है। जिसका विवरण इस प्रकार है।

1. सिम्मी हर्षिता के कथा साहित्य में नारी विमर्श गुरुनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर 2005
2. सिम्मी हर्षिता के साहित्य में नारी चेतना, रितु देवी, दक्षिण भारतीय प्रचार सभा मद्रास 2016

मेरा शोधकार्य दोनों से पृथक इस दृष्टि से है कि मैंने इनके कथा साहित्य में नारी जीवन के संघर्ष के विविध पहलुओं का गहन विश्लेषण किया है। मैंने नारी जीवन के संघर्ष व नारी होने की त्रासदी का सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य को उनके कथ्य की दृष्टि से विवेचित किया है। उनका ‘पंचकोण’ उपन्यास 2018 में प्रकाशित हुआ। जिसका दोनों ही शोध में विवेचन नहीं मिलता है। साहित्य की द्वैमासिक पत्रिका ‘अक्षरा’ में प्रकाशित ‘सूर्यास्त से पहले’ की कहानी का जिक्र इन दोनों शोध में नहीं हुआ है। साथ ही ऐसी बहुत सी कथाएँ है जिनका विवरण भी दोनों शोधकार्य में नहीं है । अतः इन सभी दृष्टि से मेरा शोध कार्य सिम्मीजी के कथा-साहित्य को एक नया आयाम देता है।

सामग्री संकलन के स्रोत

प्रस्तुत शोध कार्य की सामग्री संकलन करने में सिम्मी जी का योगदान मेरे लिए मील का पत्थर सिद्ध हुई। 2017 में सबसे पहले मेरी मुलाकात उनके घर दिल्ली पर ही हुई। बातों के दौरान उन्होंने बताया कि उनकी टाँगो का तीन बार ऑपरेशन हुआ है जिसके कारण वे ज्यादा हिल डुल नहीं सकती है। फिर भी बड़ी विनम्र भाव से उन्होंने अपने साहित्य के विषय में जानकारी दी। तद्पश्चात 2018 में दोबारा दिल्ली उनसे मिलने गई। उनकी कहानियों व उपन्यासों के पात्रों को लेकर मेरी बहुत सी बहुत सी शंकाओं का समाधान किया। सिम्मी जी की दिल्ली इच्छा थी कि कोई एक शोधार्थी उनके साहित्य को लेकर नारी के संघर्ष पर शोध कार्य करे। यह संघर्षों कहीं न कहीं उनके जीवन संघर्ष को ही बयान करता था। 12.1.2019 में तीसरी बार मैं उनसे मिली और उनका साक्षात्कार लेने का मौका मुझे मिला। उनकी तबीयत बहुत ही अधिक गंभीर थी। ‘पंचकोण’ उपन्यास उन्होंने अपने साक्षात्कार के दौरान मुझे उपहार स्वरूप भेंट की। यह मेरी उनसे अंतिम मुलाकात थी। कुछ ही दिनों पश्चात मुझे खबर मिली की 4 फरवरी 2019 को उनका देहावसान हो गया। अपने शोध कार्य की सामग्री संकलन के लिए मैंने अनेक ग्रंथालय की सहायता ली। जिसका विवरण इस प्रकार है -

1. जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, केन्द्रीय ग्रंथालय, नयी दिल्ली (दिनांक 12.01.18)
2. दिल्ली विश्वविद्यालय, केन्द्रीय ग्रंथालय, नयी दिल्ली (दिनांक 11.01.18)
3. कलिकट विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग ग्रंथालय, केरल (दिनांक 16.11.2018)
4. कलिकट विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग ग्रंथालय, केरल (दिनांक 19.12.2018)

5. अंबेडकर विश्वविद्यालय, हिन्दी ग्रंथालय, नयी दिल्ली (दिनांक 11.01.2019)

6. मंगलूर विश्वविद्यालय के हिंदी स्नातकोत्तर विभाग का ग्रंथालय, मंगलूर (कर्नाटक)

7. विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूर ग्रंथालय, मंगलूर (कर्नाटक)

सही सामग्री संकलन का दिशा निर्देशन मेरी शोध निर्देशिका से मुझे प्राप्त हुआ उन्होंने अपने निजि पुस्तकालय से मुझे मेरे शोध विषय से बहुत सी किताबें दी। मैं विशेष आभार डॉ. गीता गुप्त का देना चाहती हूँ कि जिन्होंने अपने निजी पुस्तकालय भोपाल से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'अक्षरा' के वर्ष 2004 जून में छपी कहानी 'सूर्यास्त से पहले' मुझे उपलब्ध कराई। जिसके कारण सिम्मी हर्षिता के साहित्य के अन्तर्गत सही समय पर मैं इस कहानी को सम्मिलित कर पायी।

शोध कार्य की पद्धतियाँ

प्रत्येक भाषा में शोध दो स्तरों पर होता है। प्रथम भाषा के क्षेत्र में भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से और पाठानुसंधान की दृष्टि से शोध किया जाता है। दूसरा भाषा-विशेष में लिखित साहित्य के क्षेत्र का। आलोचनात्मक दृष्टि से हिंदी में इन दोनों स्तरों में शोध किया जाता है। मैंने हिन्दी लिखित साहित्य के क्षेत्र के पर शोध किया जिसमें कई पद्धतियों का प्रयोग किया। मैंने अपनी शोध परक दृष्टि के आधार पर निम्न पद्धतियाँ अपनायी हैं।

1. अनुसंधानात्मक पद्धति

सिम्मी जी के कथा साहित्य मे नारी जीवन से संबंधित संघर्षों को जानने के लिए अनुसंधान पद्धति की आवश्यकता जान पड़ी। अतः इनके कथा साहित्य में स्त्री संघर्ष में प्रमुख कारणों की खोज व उनके पात्रों की मानसिकता को गहराई से समझने के लिए अनुसंधानात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

2. आलोचनात्मक पद्धति

आलोचनात्मक पद्धति से अनुसंधान अर्थपूर्ण व प्रभावपूर्ण बनता है। इसमें आत्मपरकता की पूरी छूट होती है। सिम्मी जी के कथा साहित्य को समझने के लिए उनके पात्रों के परिवेश का विवेचन करने के साथ ही साथ उनके संघर्ष के विभिन्न पहलुओं को सारगर्भित रूप से जानने के लिए मैंने आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसी के आधार पर मैंने उनके कथा साहित्य के निष्कर्ष को आलोचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

3. भाषा वैज्ञानिक पद्धति

किसी भी रचना में भाषा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए रचना की भाषा को जाने बिना उसे समझना बहुत ही मुश्किल होता है। सिम्मी हर्षिता के साहित्य को भाषा वैज्ञानिक पद्धति द्वारा उनके कथा साहित्य में प्रयुक्त भाषा संरचना और शैली के विभिन्न रूपों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

कार्य का विभाजन

हिन्दी साहित्य में शोध कार्य करने हेतु मैंने वर्ष 2015-16 में मंगलूर विश्वविद्यालय में अपना नाम पंजीकृत करवाया। 2015 से अब तक मैंने शोध से संबंधित जो कार्य किया है उसका क्रमबद्ध विवरण इस प्रकार है -

2016 फरवरी से अगस्त तक पीएच.डी. का कोर्स वर्क संपन्न हुआ। इस दौरान मैंने शोध कार्य से संबंधित विविध विषयों का अध्ययन किया। जिससे इस शोध कार्य को संपन्न करने में मुझे काफी सहायता मिली।

प्रथम वर्ष

पीएच. डी. कोर्स वर्क के पश्चात सामग्री संकलन किया तथा संकलित सामग्री के आधार पर सिम्मी जी की कहानियों का अधय्यन किया। इसी दौरान मैंने सिम्मी हर्षिता से मुलाकात दिल्ली में की। जिनके कथा साहित्य पर मुझे शोध करना था। उनके साथ मैंने अपने विषय को लेकर चर्चा भी की। इस अवधि में मैंने सिम्मी हर्षिता की कहानी भूख की बिक्रीः श्रमिक का अंतर्द्वंद्व पर अपना आलेख कर्नाटका विश्वविद्यालय धारवाड़ से प्रस्तुत किया। मैंने प्रथम अध्याय प्रारंभ किया।

द्वितीय वर्ष

इस वर्ष मैंने संकलित सामग्री के आधार पर संबंधित टिप्प्णी तैयार की। इस अवधि में मैंने प्रथम अध्याय पूरा कर द्वितीय अध्याय के विषय से संबंधित उपविषयों के बारे में अपनी शोध निर्देशिका से चर्चा की और उन्हीं के निर्देशानुसार द्वितीय अध्याय का लेखन कार्य पूर्ण किया व तृतीय अध्याय का कार्य जारी रखा। इस दौरान मैंने समकालीन लेखिका सिम्मी हर्षिता की कहानी ‘कब्रगाथा’ में स्त्री प्रतिरोध पर एक आलेख प्रस्तुत किया।

तृतीय वर्ष

इस अवधि में मैंने तृतीय अध्याय का लेखन कार्य पूर्ण किया। इसके पश्चात मैंने चतुर्थ अध्याय के संबंध में अपनी शोध निर्देशिका से मैंने चर्चा की और इसी अवधि में चतुर्थ अध्याय को भी पूर्ण किया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय अध्यायों को शोध निदेशिका के परीक्षण के बाद टंकण कार्य के लिए दिया।

चतुर्थ वर्ष

इस अवधि में मैंने प्रथम, द्वितीय व तृतीय पूर्व टंकित सामग्री की प्रूफ रीडिंग की। चतुर्थ अध्याय को टंकन कार्य के लिए दिया। पाँचवा अध्याय पूर्ण किया। इसके बाद, छठा व सातवाँ अध्याय लिखा। इन अध्यायों के परीक्षण के लिए शोध निदेशिका को दिया। उनके दिशा निर्देशन में अपेक्षित सुधार किए गए। तत्पश्चात् उनके सलाहानुसार सुधार किए अध्यायों को टंकण कार्य के लिए दिया। पूर्व टंकित सामग्री की प्रूफ रीड़िग की गई।

सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : नारी जीवन संघर्ष

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

नारी जीवन संघर्ष : अवधारणा एवं स्वरूप

1.0 प्रस्तावना

1.1 नारी जीवन : अर्थ एवं स्वरूप

1.2 नारी जीवन संघर्ष : अवधारणा और स्वरूप

1.3 नारी जीवन संघर्ष के विभिन्न काल

1.3.1 वैदिक काल में नारी संघर्ष

1.3.2 महाकाव्य काल में नारी संघर्ष

1.3.3 बौद्ध और जैन काल में नारी संघर्ष

1.3.4 मध्यकाल में नारी संघर्ष

1.3.5 आधुनिक काल में नारी संघर्ष

1.4 नारी जीवन संघर्ष के विभिन्न स्तर

1.4.1 पारिवारिक स्तर पर नारी संघर्ष

1.4.2 सामाजिक स्तर पर नारी संघर्ष

1.4.3 आर्थिक स्तर पर नारी संघर्ष

1.4.4 राजनीतिक स्तर पर नारी संघर्ष

1.4.5 सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्तर पर नारी संघर्ष

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : वस्तु विश्लेषण

2.0 प्रस्तावना

2.1 सिम्मी हर्षिता का उपन्यास साहित्य : वस्तु विश्लेषण

2.1.1 सम्बन्धों के किनारे (1984) : कर्ज़ के कारण बिकी हुई लड़की का ज़िन्दगीनामा

2.1.2 यातना शिविर (1990) : दहेज पीड़ित एक युवती की त्रासद कथा
2.1.3 रंगशाला (2003) : दाम्पत्य संबंधों में विश्वास हनन की गाथा
2.1.4 जलतरंग (2010) : स्त्री के अकेलेपन का दस्तावेज़
2.1.5 पंचकोण (2018) : पति-पत्नी और वो के बीच की व्यथा-कथा
2.2 सिम्मी हर्षिता का कहानी साहित्य : वस्तु विश्लेषण
2.2.1 कमरे में बंद आभास (1975)
2.2.2 धराशायी (1984)
2.2.3 तैंतीस कहानियाँ (1996)
2.2.4 बनजारन हवा (2000)
2.2.5 इस तरह की बातें (2007)
2.2.6 प्रेम संबंधों की कहानियाँ (2009)
2.2.7 सिम्मी हर्षिता की लंबी कहानियाँ (2014)
2.2.8 सिम्मी हर्षिता : चुनी हुई कहानियाँ (2015)
2.2.9 सिम्मी हर्षिता की लोकप्रिय कहानियाँ (2016)
2.3 'सूर्यास्त से पहले' 2004 साहित्य की द्वैमासिक पत्रिका 'अक्षरा' में प्रकाशित कहानी
निष्कर्ष

तृतीय अध्याय
सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : नारी जीवन का पारिवारिक संघर्ष
3.0 प्रस्तावना
3.1 नारी जीवन के पारिवारिक संघर्ष का स्वरूप
3.2 सिम्मी हर्षिता के कथा- साहित्य में नारी का पारिवारिक संघर्ष
3.2.1 पारिवारिक रिश्तों में संघर्ष
3.2.1.1 बेटी के रूप में संघर्ष
3.2.1.2 बहन के रूप में संघर्ष
3.2.1.3 माता के रूप में संघर्ष
3.2.1.4 सास- बहू के रूप में संघर्ष
3.2.1.5 ननद -भाभी के रूप में संघर्ष
3.2.1.6 पारिवारिक कलह

3.2.2 दाम्पत्य जीवन में नारी संघर्ष
3.2.2.1 घरेलू हिंसा
3.2.2.2 अनैतिक संबंध
3.2.2.3 यौन वितृष्णा
3.2.2.4 पुरुषों की संकुचित मानसिकता
3.2.2.5 पुरुष के वर्चस्व से उपजा संघर्ष
3.2.3 पारिवारिक उत्तरदायित्वों का संघर्ष
3.2.3.1 संतान को शिक्षित व सुव्यवस्थित करने का संघर्ष
3.2.3.2 परिवार की रक्षा का संघर्ष
3.2.3.3 जोखिम उठाने का संघर्ष
3.2.4 एकाकीपन की त्रासदी
3.2.4.1 अविवाहित नारी का संघर्ष
3.2.4.2 अकेलेपन का संघर्ष
3.2.4.3 आत्मीयता से वंचित
3.2.4.4 घुटनपूर्ण पारिवारिक परिवेश
3.2.4.5 स्त्री का मानसिक संघर्ष
3.2.4.6 आत्मपीड़ा व आत्मसंघर्ष से ग्रस्त नारी
3.2.4.7 वृद्धावस्था में स्त्री संघर्ष
3.2.4.8 अहम् से उत्पन्न संघर्ष
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा- साहित्य : नारी जीवन का सामाजिक संघर्ष

4.0 प्रस्तावना
4.1 नारी जीवन के सामाजिक संघर्ष का स्वरूप
4.2 सिम्मी हर्षिता के कथा- साहित्य में नारी का सामाजिक संघर्ष
4.2.1 लिंग भेद का शिकार
4.2.1.1 पुत्री जन्म अभिशाप
4.2.1.2 तिरस्कृत व संघर्षमय बचपन

4.2.1.3 कन्या वध
4.2.2 सामाजिक समस्या
4.2.2.1 दहेज की समस्या
4.2.2.2 वैवाहिक विसंगतियाँ
4.2.2.2.1 परित्यक्त नारी का संघर्ष
4.2.2.2.2 अनैच्छिक विवाह विच्छेद
4.2.2.2.3 अनचाहा 'आनन्द कारज'
4.2.2.2.4 बेमेल विवाह की चुनौतियाँ
4.2.2.2.5 पुनर्विवाह की विड़म्बना
4.2.2.3 पीढ़ियों का संघर्ष
4.2.2.4 चरित्रहीनता का लांछन
4.2.2.5 शोषित दलित नारी का संघर्ष
4.2.2.6 विवाह संस्था पर कटाक्ष करती नारी
4.2.3 कार्यक्षेत्र में नारी का संघर्ष
4.2.3.1 समाज सेवा हेतु संघर्ष
4.2.3.2 नारी अधिकारों का संघर्ष
4.2.4 महानगरीय जीवन की विडम्बना और नारी संघर्ष
4.2.4.1 लिव इन रिरेशनशिप
4.2.4.2 सामाजिक मर्यादाओं का संघर्ष
4.2.4.3 उच्च मध्यवर्गीय समाज का यौन विषयक दृष्टिकोण
4.2.4.4 नैतिक मूल्यों का हनन
4.2.5 शैक्षणिक स्तर पर नारी संघर्ष
4.2.5.1 शिक्षा के लिए संघर्ष
4.2.5. 2 विद्यार्थी जीवन का संघर्ष
4.2.5.3 सही मार्गदर्शन का अभाव
4.2.6 प्रेम सम्बन्ध और नारी संघर्ष
निष्कर्ष

पंचम अध्याय
सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : नारी जीवन का आर्थिक संघर्ष
5.0 प्रस्तावना

5.1 नारी जीवन के आर्थिक संघर्ष का स्वरूप

5.2 सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य में नारी जीवन का आर्थिक संघर्ष

5.2.1 आर्थिक स्वालंबन हेतु संघर्ष

5.2.1.1 बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष

5.2.1.2 ऋणमुक्ति के लिए संघर्ष

5.2.1.3 ग्रामीण स्त्रियों का महानगर की ओर पलायन

5.2.2 कामकाजी नारी का संघर्ष

5.2.2.1 अशिक्षित नारी का संघर्ष

5.2.2.2 शिक्षित नारी का संघर्ष

5.2.3 आर्थिक विषमताओं का संघर्ष

5.2.4 आर्थिक सत्ता और नारी संघर्ष

निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : नारी जीवन का धार्मिक संघर्ष

6.0 प्रस्तावना

6.1 नारी जीवन के धार्मिक संघर्ष का स्वरूप

6.2 सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य में नारी जीवन का धार्मिक संघर्ष

6.2.1 धार्मिक आस्था और नारी संघर्ष

6.2.2 वैवाहिक परम्पराओं से उपजा नारी संघर्ष

6.2.3 बहुपत्नी प्रथा का दंश

6.2.4 भाग्यवाद और नारी

6.2.5 धार्मिक अंधविश्वासों से जूझती नारी

6.2.6 साम्प्रदायिक दंगे और नारी संघर्ष

निष्कर्ष

सप्तम अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा - साहित्य : शिल्प विधान

7.0 प्रस्तावना

7.1 शिल्प : अर्थ एवं स्वरूप

7.1.1 शिल्प के आधारभूत तत्त्व

7.1.2 सिम्मी हर्षिता की रचनाओं का शिल्प

7.1.2.1 कथावस्तु

7.1.2.2 चरित्र

7.2 साहित्य में भाषा का स्वरूप एवं महत्त्व

7.2.1 कथा साहित्य में भाषा

7.2.2 सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य की भाषा के विविध रूप

7.2.2.1 परिनिष्ठित भाषा

7.2.2.2 व्यावहारिक भाषा

7.2.2.3 मुहावरेदार भाषा

7.2.2.4 पंजाबी मिट्टी की खुशबू वाली भाषा

7.2.2.5 अँग्रेज़ी मिश्रित भाषा

7.2.2.6 प्रतीक बहुल भाषा

7.2.2.7 सूक्तिमयता

7.3 शब्द प्रयोग

7.3.1 तत्सम शब्दों का प्रयोग

7.3.2 तद्भव शब्दों का प्रयोग

7.3.3 देशज शब्दों का प्रयोग

7.3.4 अँग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग

7.3.5 युग्म शब्दों का प्रयोग

7.3.6 अश्लील एवं असंगत शब्दों का प्रयोग

7.3.7 कहावतों का प्रयोग

7.3.8 मुहावरों का प्रयोग

7.4 शैली

7.4.1 सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य की शैली

7.4.1.1 वर्णनात्मक शैली

7.4.1.2 आत्मकथात्मक शैली

7.4.1.3 व्यंग्यात्मक शैली

7.4.1.4 संवादात्मक शैली

7.4.1.5 काव्यात्मक शैली
7.4.1.5.1 गीत-ग़ज़ल और कविताओं का प्रयोग
7.4.1.6 पत्रात्मक शैली
7.5 निष्कर्ष
उपसंहार
- परिशिष्ट -1 सिम्मी हर्षिता : व्यक्तित्व एवं साहित्यिक अवदान
- परिशिष्ट -2 सिम्मी हर्षिता से साक्षात्कार में प्रयुक्त प्रश्नावली
- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संक्षेपिका

आधुनिक कथा साहित्य में सिम्मी हर्षिता का नाम एक सम्मानित रचनाकार के रूप में लिया जाता है। वे सूक्ष्मदर्शी व अत्यंत संवेदनशील लेखिका है। इन का संपूर्ण साहित्य मौलिक व प्रभावशाली है। एक नारी होने के नाते उन्होंने नारी जगत की सूक्ष्म से सूक्ष्म पहलूओं को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। सिम्मी हर्षिता की रचनाएँ वैचारिक धरातल पर नारी-जीवन के संघर्ष को मुखरित करती है। इनके साहित्य की नारी, अपमानित, उपेक्षित, तिरस्कृत और घरेलू हिंसा से पीड़ित है। इनकी कथाओं का सर्वाधिक सशक्त पक्ष नारी मन का अंतर्द्वंद्व है जो किसी न किसी समस्या को झेलती है।

प्रस्तुत शोध कार्य **सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्यः नारी-जीवन संघर्ष** में उनके साहित्य के सभी वर्ग की नारियों का जीवन संघर्ष चित्रित है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने इस मौलिक शोध-कार्य को सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय

नारी जीवन संघर्ष : अवधारणा एवं स्वरूप

प्रस्तुत अध्याय में 'नारी' शब्द के अर्थ की चर्चा करते हुए उसके मूल स्वरूप की व्याख्या तथा उसकी अवधारणा का वर्णन है। 'मानव जीवन' संघर्षशील है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहना ही पड़ता है। इसी के आधार पर 'संघर्ष' का अर्थ बताते हुए नारी संघर्ष की आवधारणा को दो रूपों में मुखरित किया गया है।

1) जीने के लिए

2) अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष।

स्त्री व पुरुष समाज की दो स्वतंत्र इकाइयाँ है। दोनों के व्यक्तित्व की पूर्णता से ही समाज का निर्माण होता है। परम्परा से पितृसत्तात्मक भारतीय समाज में पुरुष का प्रभुत्त्व रहा है। जिसके कारण पुरुष सदैव से कर्मठ बना रहा और स्त्री उसके प्रभाव से कुंठित होती गई। दोनों एक दूसरे के पूरक होते हुए भी समाज में पुरुष वर्ग अपने अधिकार पूर्ण व्यवहार से मंडित हुआ तो स्त्री अपने ऊपर आरोपित हीन भावना व शोषण से खंडित होती चली गई। समाज में वह दोयम दर्जे की नागरिक बन कर रह गई। इसी के आधार पर नारी संघर्ष की विभिन्न स्थितियों का आंकलन किया गया है। उसके संघर्ष के इतिहास को वैदिक काल से आधुनिक काल तक इस अध्याय में दर्शाया गया है। वैदिक काल में स्त्री सम्मानित थी। उसके अस्तित्व को प्रमुखता दी जाती थी। धीरे-धीरे जब पुरुष ने यह अनुभव करना प्रारंभ कर दिया कि स्त्री अपनी बुद्धिमत्ता से उससे श्रेष्ठ है, तो उसने स्त्री को 'वस्तु' के रूप में भोगना शुरू कर दिया है और वह केवल कष्टों की अधिकारिणी बन कर रह गई। मध्यकाल तक आते-आते स्त्री की दशा दयनीय हो गई। तत्पश्चात स्वतंत्रता पूर्व अठ्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सामाजिक परिवर्तन की लहर उठी। ब्रिटिश सरकार के आधिपत्य के पश्चात प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षा का प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा। उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में नवजागरण काल का प्रादुर्भाव हुआ। जिसमें सुधारवादी आंदोलनों के तहत नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में विचार होने लगा। विभिन्न महिला संगठनों की स्थापना की गई। जिसमें महिलाओं ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई। इस प्रकार आधुनिक काल तक आते-आते स्त्री शिक्षा के प्रभाव से उनमें अपने कर्त्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति नई चेतना जाग्रत हुई। स्त्री ने अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व में बाधक तत्त्वों को हटाने का भरसक प्रयास किया। अपनी अस्मिता की नई पहचान बनाई। उसे महसूस हुआ कि आत्मनिर्भरता से ही पुरुष वर्चस्व को चुनौती दी जा सकती है।

इसके उपरांत नारी जीवन के संघर्ष के विविध क्षेत्रों जैसे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में उसके संघर्ष को रेखांकित किया गया है। इन संघर्षों में पुरुष के बराबर स्थान पाने में उसके स्वरूप में

काफी परिवर्तन आए पर पुरुष मानसिकता अभी भी उसके संघर्ष का कारण ही रहा है। जब तक लिंग भेद की समस्या मानव समाज में अंतर्निहित है तब तक यह संघर्ष भी जारी है।

द्वितीय अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : वस्तु-विश्लेषण

प्रस्तुत अध्याय में सिम्मी जी के पाँच उपन्यासों की वस्तु पर विहंगम् दृष्टि डाल कर उसका वस्तु विश्लेषण किया है। सिम्मी हर्षिता स्त्रीवादी न होते हुए भी नारी जीवन संघर्ष को अपने लेखन एवं चिन्तन में सर्वोपरि स्थान दिया है। उन्होंने कुल पाँच उपन्यास लिखे हैं, जिनमें नारी जीवन के विभिन्न संघर्षों को उजागर किया है। नारी की पारिवारिक-सामाजिक स्थिति, उस पर होने वाले अन्याय, अत्याचार तथा स्त्री-पुरुष असमानता आदि को उन्होंने अपने उपन्यासों में बड़े रोचक ढंग से समेटा है। प्रत्येक उपन्यास उनके जीवनानुभवों की एक सशक्त कड़ी है। जिस कड़ी के सहारे वे संवेदनशील पाठकों को चिन्तन हेतु बाध्य करती है। सिम्मी जी के उपन्यासों के स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों-परम्पराओं, आर्थिक विसंगतियों, पारिवारिक बन्धनों आदि से जूझते और स्त्री- अधिकारों की ओर संकेत करते दृष्टिगोचर होते हैं। उनके पाँच उपन्यास हैं। 1. सम्बन्धों के किनारे (1984), 2. यातना शिविर (1990), 3. रंगशाला (2003), 4. जलतरंग (2010), 5. पंचकोण (2018)

'संबंधों के किनारे' की हरतेज एक सशक्त नारी जो अपनी इच्छा शक्ति के बल पर अपने लिए उन्मुक्त वातावरण की सृष्टि करती है। उसकी सारी लड़ाई असुरक्षा से सुरक्षा, अपमान से सम्मान की ओर अग्रसर है। पुरुषसत्तात्मक समाज में रहते हुए वह विवाह विवाह नामक संस्था को चुनौती देते हुए पुरुषीय संरक्षण को अस्वीकार कर नारी सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत करती है। 'यातना शिविर' के माध्यम से लेखिका ने पुरुषप्रधान समाज में यंत्रणापूर्ण जीवन जी रही दिशा की त्रासदी को तीक्ष्णता के साथ प्रस्तुत किया है। जो अपने ससुराल में दिशा को दहेज के लिए

निरतंर उत्पीड़ित है। उसके साथ हुए अमानवीय व्यवहार को लेखिका ने उजागर किया है। 'रंगशाला' में स्त्री के अन्तर्द्वन्द्वों और अंतर्विरोधों का चित्रण है। प्रेम, परिवार और दाम्पत्य जीवन पर केन्द्रित राधिका भारतीय स्त्रीवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है मगर उच्छृंखल कोसीना का उन्मुक्त यौन व्यवहार, भौतिक समृद्धि और देह-केन्द्रित पश्चिमी स्त्रीवाद उस पर भारी जान पड़ता है। इक्कीसवीं सदी में स्त्री विमर्श के इस दौर में, जब स्त्री-पुरुष समानता और नारी-मुक्ति के आंदोलन प्रबल हो रहे हैं ऐसे में विवाहेतर काम-संबंधों की पक्षधरता या विरोध आसान काम नहीं। 'रंगशाला' इसी चिंतन को चुनौती देता है। 'जलतरंग' नायिका प्रधान उपन्यास है। इसमें सोहना के आत्मसंघर्ष की वह यात्रा है, जब वह परिवार और समाज की मान्यताओं से टकराती ही नहीं बल्कि अपनी जिजीविषा को भी प्रबल बना देती है। यही सिम्मी जी की कथ्य की विशिष्टता है। यह संघर्ष उसे तोड़ नहीं पाता। 'पंचकोण' उपन्यास अल्पसंख्यक वर्ग के एक मुस्लिम परिवार की हमीदानिसा के संघर्षमय जीवन की कथा है जिसे दिल्ली के घर में काम करने वाले मालिकों द्वारा नया नाम दे दिया गया - 'रानी'। जिसके कारण उनकी रोजी चलती है। इस प्रकार इस अध्याय में सिम्मी जी के पाँचों उपन्यासों की गहनता से अध्ययन कर उसके कथ्य का विहंगावलोकन किया गया है।

इसी अध्याय में सिम्मी हर्षिता की कहानियों को सारगर्भित रूप से उसका वस्तु विश्लेषण किया गया है। इसमें कथ्य की छटा और विविध भंगिमाओं को जिस तरह सँजोने का प्रयास किया गया है, उसमें समूची कहानियों का बिम्ब आसानी से उभर आता है। सिम्मी जी की अड़तीस कहानियाँ अपने आसपास की लगने लगती हैं। कहानियों के पात्र दर्पण की तरह अपनी खूबियों व खामियों के साथ हमारे आमने आते है। इनके नौ कहानी संग्रहों में कुल सैंतीस कहानियाँ है व एक कहानी 'सूर्यास्त से पहले' साहित्य की द्वैमासिक पत्रिका 'अक्षरा' में प्रकाशित है। अतः इनकी कुल अड़तीस कहानियाँ है।

1. कमरे में बंद आभास (1975) - इस कहानी संग्रह में कुल पंद्रह कहानियाँ है। चक्रभोग, भूख की बिक्री, अपने-अपने दायरे, चक्रव्यूह, कमरे में बंद आभास,

इलायची के पौधे, ध्वनियाँ, शब्दों का क्रम, सड़क पर, अनिमंत्रित, शेष निर्णय, आशीर्वादहीन, अपने निर्णय के सलीब, खाली गाँव, उसका मन। इस संग्रह की सभी कहानियाँ मानवीय विवश्ता और आधुनिक जीवन की विसंगतियों के मार्मिक दस्तावेजों के रूप में दिखाई देती है। इसमें नारी मन के अनेक मार्मिक प्रसंगों को लेखिका ने उभारा है जो आज की स्त्री बड़ी गहराई से महसूस करती है।

2. धराशायी (1990) - इस कहानी संग्रह में कुल नौ कहानियाँ हैं जो इस प्रकार है - आत्मकथा का मनोभाव, विरोध, धराशायी, ठहरी हुई बूंदे, मातमी धुन, त्रुटि का निवारण, उसका तिकोन, सड़क पर चलते हुए, परिधि। इन सभी कहानियाँ के केन्द्र में असंतुष्ट नारी हैं और इनमें लेखिका की गहरी संवेदना मानवीय संपृक्ति का सबूत मिलता है।

3. तैंतीस कहानियाँ (1996) - यह सिम्मी हर्षिता की तैंतीस कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में 'आपकी मेहरबानी', कब्रगाथा, इस तरह की बातें, उस फूल का नाम, बनजारन हवा, काजू, मैं आ रहा हूँ, मोर पंखों की दुनिया, नयी रचनाएँ है। शेष कहानियाँ 'धराशायी' व 'बंद कमरे में आभास' कहानी संग्रह में प्रकाशित हो चुकी है। वास्तविक जीवन और संसार के अनेक दर्द, दंश और कोलाहल के घेरे को देख भोगकर उनसे जूझने का विश्वास से पता चलता है कि लेखिका का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सूक्ष्म और पारदर्शी है।

4. बनजारन हवा (2000) -इस कहानी संग्रह में कुल दस कहानियाँ है जिनमें 'तरू को देख आना' एक नयी रचना है और बाकी की कहानियाँ अन्य संग्रहों में संकलित है। 'तरू को देख आना' कस्बाई संस्कृति में मानवीय रिश्तों में आत्मीयता के अभाव की अनुभूति कराने वाली कहानी है।

5. इस तरह की बातें (2007) - इस संग्रह में सभी कहानियों का प्रकाशन अन्य कहानी संग्रहों में हो चुका है।

6. प्रेम संबंधों की कहानियाँ (2009) - इस संग्रह में कुल सोलह कहानियाँ हैं जिनमें 'आमने-सामने खड़े सपने', 'विस्थापित सदी' ये दो नयी कहानियाँ हैं। शेष कहानियों

की पुनरावृत्ति हुई है। इनमें मानव जीवन का दर्द, दंश तथा उनसे जूझने की विश्वास दृष्टि है। लेखिका ने अपने पात्रों की मानसिकता को बखूबी व्यक्त किया है। परिवार-समाज की बदलती मानसिकता और परिस्थितियों का चित्रण कर उससे उद्भूत मानवीय संकट का यथार्थ रूपांकन करती है, हर जगह स्त्री के दुख-दर्द को समाहित करना इनकी लेखन कला को दर्शाता है।

7. सिम्मी हर्षिता की लंबी कहानियाँ (2014) - इस कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ है। इस कहानी संग्रह में प्रकाशन की दृष्टि से सभी कहानियों की पुनरावृत्ति हुई है।

8. सिम्मी हर्षिता : चुनी हुई कहानियाँ (2015) - इस कहानी संग्रह में कुल पंद्रह कहानियाँ है। इस संग्रह में 'कुछ था तो था' एक नयी कहानी है। जो अन्य किसी में संकलित नहीं है। 'कुछ था तो था' में लेखिका ने साहित्य जगत के यथार्थ को प्रस्तुत किया है।

9. सिम्मी हर्षिता की लोकप्रिय कहानियाँ (2016) - इस संग्रह में कुल तेरह कहानियाँ संग्रहित है। प्रकाशन की दृष्टि से इसकी सभी कहानियों की पुनरावृत्ति हुई है।

10. 'सूर्यास्त से पहले' 2004 साहित्य की द्वैमासिक पत्रिका **'अक्षरा'** में प्रकाशित कहानी में सिम्मी हर्षिता ने वृद्धावस्था की लाचारी का बयान किया है।

इस प्रकार इनकी समग्र कहानियों का कथ्यावलोकन व वस्तु विश्लेषण भी इस अध्याय में हुआ है।

तृतीय अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा- साहित्य : नारी जीवन का पारिवारिक संघर्ष

प्रस्तुत अध्याय में उपन्यासों व कहानियों के संदर्भ में नारी के संघर्षपूर्ण पारिवारिक जीवन के के विविध आयामों को उद्घाटित किया गया है। भारतीय समाज की सबसे सुदृढ़ इकाई परिवार है। परिवार के इर्द-गिर्द ही स्त्री की जड़ता व शोषण के बीज दिखाई देते है। पारिवारिक रिश्तों से पैदा होने वाली कड़वाहट का मार्मिक चित्रण सिम्मी जी के साहित्य में हुआ है। नारी अपने पारिवारिक दायित्वों

को निभाती हुई पारिवारिक व्यवस्था पर प्रश्न चिहन लगाती है। इनकी पारिवारिक कहानियाँ समाज के समस्त स्त्री वर्ग को अपने अस्तित्व के लिए लड़ने का हौसला देती है। 'परिवार' सामाजिक इकाई होने के कारण विवाह संस्था इसकी आधार शिला है। इस आधार शिला के द्वारा ही नारी को पराधीन बनाया जाता है। उसे अपने दाम्पत्य जीवन में घरेलू हिंसा, अनैतिक संबंध, पुरुषों की संकुचित मानसिकता का शिकार होना पड़ता है।

चतुर्थ अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा- साहित्य : नारी जीवन का सामाजिक संघर्ष

पुरुषों के वर्चस्व से उपजी नारी के जीवन का संघर्ष कई आयामों को छूता है। इनके कथा-साहित्य के स्त्री पात्र सामाजिक व्यवस्था को बदलने के लिए संकल्पबद्ध है तो कुछ परिस्थितियों के आगे घुटने टेक देती हैं। सामाजिक कारणों से कुंठित स्त्रियाँ अपनी दमित इच्छाओं पर सुदृढ़ता से विजय पाने का साहस रखती है। वहीं अन्तर्मुखी नारी सामाजिक जीवन से विच्छेदित होकर एकांकी जीवन यापन करने का दंश झेलती है। अपने अंतर्द्वंद्व से पीड़ित स्त्री पुरुषसत्तात्मक समाज पर कई सवाल भी खड़े करती है क्योंकि उन्हें अपने अहं के साथ किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार्य नहीं है। आधुनिक युग में कार्यक्षेत्र में आना स्त्री के लिए आम बात हो गई है फिर चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित। वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। प्रकृति से स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक है। उनके पूरक हुए बिना न किसी परिवार की कल्पना की जा सकती है न समाज की और देश की। नारी बस इतना चाहती है कि पारिवारिक और सामाजिक जीवन में उसे आत्मसम्मानपूर्ण साझेदारी मिले। यही उसके संघर्ष का लक्ष्य है।

पंचम अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : नारी जीवन का आर्थिक संघर्ष

प्रस्तुत अध्याय में सिम्मी हर्षिता ने अपने कथा साहित्य के संदर्भों में आर्थिक स्वावलंबन के लिए संघर्ष करने वाली स्त्रियों के जीवन संघर्ष का मार्मिक रूप से

चित्रण किया है। गरीबी, अभाव, निम्न जीवन स्तर, आर्थिक विषमता हर हाल में कष्ट और अपमान सहन करके काम करने वाली नारी का संघर्ष इसमें प्रतिफलित है। सिम्मी जी के कथा साहित्य में आत्मनिर्भर कामकाजी स्त्रियों ने घर और दफ्तर इन दोनों मोर्चों को बखूबी संभाला है। शिक्षित होने के बावजूद नौकरी तंत्र में पिसने की लाचारी का संघर्ष इनमें बड़ी गहराई से दृष्टिगोचर होता है।

षष्ठ अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : नारी जीवन का धार्मिक संघर्ष

प्रथा-परंपराओं का पालन करने से पहले स्त्री को विवेक की कसौटी पर अपने आप को मांझना पड़ता है। सिम्मी जी ने अपनी कहानियों व उपन्यासों के माध्यम से मानवता प्रेम का संदेश देने वाले धर्म के वास्तविक रूप को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। उन्होंने व्यक्ति को धर्म से नहीं उसके कर्मों के आधार पर श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया है। अतः इनके नारी पात्र अपने कर्म की सोच विचार से गलत मान्यताओं को नकारती है। धार्मिक कट्टरता के बावजूद लेखिका के पात्र धर्म के प्रति अपनी आस्था को छोड़ती नहीं। आज हम भले ही आधुनिक काल में हैं पर अब भी हमारा समाज विभिन्न रूढ़ियों, परंपराओं और अंधविश्वासों से जकड़ा हुआ है। लेखिकाओं की रचनाओं के कथ्य में धर्म और संप्रदाय के आधार हिंसा तथा उसके दुष्परिणामों का चित्रण इस अध्याय में है। इस प्रकार सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य पर नारी संदर्भ में धार्मिक मान्यताओं का सकारात्मक और नकारात्मक संघर्ष तथा आर्थिक समानता पाने की इच्छा से जूझती नारी का सर्वतोमुखी चित्रण देखने को मिलता है।

सप्तम अध्याय

सिम्मी हर्षिता का कथा-साहित्य : शिल्प - विधान

प्रस्तुत अध्याय में सिम्मी हर्षिता के कथा-साहित्य के अंतर्गत अड़तीस कहानियों व पाँच उपन्यासों के शिल्प विधान का सम्यक विवेचन किया गया है। इस

अध्याय में शिल्प के अर्थ व उसके स्वरूप को परिभाषित किया गया है। सिम्मी जी ने अपने रचना-लोक में अपनी अनुभूतियों को निजी शिल्प विधान में बाँधकर प्रस्तुत किया है। इसलिए इनकी कहानियों और उपन्यासों में शिल्पगत नवीनता देखने को मिलती है। शिल्प-विधान के अंतर्गत जिन तत्त्वों का होना अनिवार्य है उनका संपूर्ण प्रयोग उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। उनकी रचनाओं के शिल्प में अंतर्निहित कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, भाषा और शैली की दृष्टि से उनका शिल्पगत विवेचन हुआ है। उनके रचना शिल्प में दो तत्त्व कथावस्तु और चरित्र पर भाषा-शैली के आधार पर सविस्तार विवेचन किया गया है।

सिम्मी हर्षिता ने एक ही शैली का प्रयोग न कर कथावस्तु के आधार पर विभिन्न शैलियों को अपनाया है। इनकी रचनाओं का शैली की दृष्टि से अवलोकन करने पर प्रमुख रूप से वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक व संवादात्मक शैली का प्रयोग दिखाई देता है। इनके उपन्यास 'जलतरंग' में डायरी शैली व पत्र शैली तथा दो कहानियों में व्यंग्य शैली का प्रयोग मिलता है। उन्होंने गीत, गजल, दोहों, सूक्तियों और कविताओं को भी अपनी कथाओं के साथ पिरोया है। इसलिए हम कह सकते है कि सिम्मी जी के काव्यात्मक शैली को भी अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। जिसकी संक्षेप में चर्चा इस अध्याय में की गई है। सिम्मी हर्षिता ने नारी जीवन में परिलक्षित अनबूझी पहेलियों को उकेरने का प्रयास किया है। जहाँ भाषा शैली का प्रश्न उठ खड़ा होता है वहाँ इस तथ्य की परीक्षा होती है कि रचनाकार अपनी संवेदनाओं को उत्कृष्ट रूप से व्यक्त करने में कहाँ तक सफल हुआ है ? जिसमें सिम्मी हर्षिता पूर्णतः सफल रही। इनका संपूर्ण कथा-साहित्य हृदय स्पर्शी गाथा है साथ ही अपने लेखन की भाषा के माध्यम से पाठकों के अंर्तमन को छू जाता है। वे जानती हैं कि भाषा का संबंध आदमी के व्यक्तित्व से जुड़ा नहीं होता बल्कि वह उसके अस्तित्व से जुड़ा होता है। इस कारण किसी भी कहानीकार की भाषा सृजनात्मक भाषा की सभी संभावनाओं के द्वार खोल देती है। सिम्मी जी ने लेखकीय भाषा को एक ऐसी शक्ति देना चाही जिससे अनुभूत सत्य से साक्षात्कार हो सके।

अतः अपने कथ्य को अभिव्यक्ति देने में लेखिका की भाषा पूर्ण रूप से सफल हुई है। उनके उपन्यास अपने कथा-प्रवाह से पाठ को बाँध देते है तो कहानियों के एक-एक शब्द हमारी चेतना पर को प्रहार करते हैं। व्यंग्य की धार हृदय को चोट करती है तो प्रश्नों की बौछार किसी भी सजग-सचेत व्यक्ति को सोचने के लिए बाध्य कर देती है। उनका लेखन पाठक को निष्क्रिय तथा तटस्थ नहीं रहने देता है। सिम्मी जी के कथा-साहित्य में मानव जीवन की अद्‌भुत विश्लेषण शक्ति प्रश्नाकुलता तथा उद्वेलित करने की क्षमता उजागर है।

उपसंहार

समकालीन कथा-साहित्य में महिला लेखन का संदर्भ निजता से आरंभ होकर व्यापक जीवन से जुड़ा है। इसलिए उनके कथा-साहित्य में नारी जीवन की व्यथा, संघर्ष और आकांक्षा निहित है। नारी का अंतर्द्वंद्व ही उसके संघर्ष का जनक होता है इसलिए सिम्मी हर्षिता के कथा साहित्य में नारी जीवन का संघर्ष विभिन्न रूपों में परिलक्षित है। इनके कथा साहित्य में नारी के संघर्ष करने के ढंग अलग है पर निश्चित ही वे सभी अपने-अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते, अपने-अपने मोर्चों पर डटी हुई हैं। सिम्मीजी की कलात्मक उर्जा को नकारा नहीं जा सकता। लेखिका की संवेदनशीलता का परिचय उनके साहित्य द्वारा हो जाता है। इनका कथा साहित्य स्त्री संघर्ष व नारी अस्तित्व को सही पहचान देने में सफल हुआ है इनकी कहानियों में पुरुष वर्चस्व की निरंकुशता में घुट रही नारी के मानासिक द्वंद्व का उतार-चढ़ाव साफ दिखाई देता है। इनकी कहानियाँ स्वरति से मुक्त व भावना प्रधान है।

सिम्मी जी के कथा-साहित्य में शिल्प के सम्बन्ध में ज्ञात यह हुआ कि इनकी कथा वस्तु व चरित्र में भाषा का विविध रूपों में प्रयोग हुआ है। सिम्मी जी की भाषा व्यावहारिक मुहावरेदार, पंजाबी मिट्टी की खुशबू लिए सूक्तिपरक, प्रतीकात्मक बहुल भाषा है। उनकी शैली में वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, व्यंगयात्मक, संवादात्मक व पत्रात्मक शैलियों का पुट देखने को मिलता है। अतः शिल्प रचना के आधारभूत तत्त्वों

को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने कथा साहित्य को अपनी लेखनी से समृद्ध बनाया है। इस प्रकार सिम्मी हर्षिता ने नारी मन की अनगिनत गुत्थियों को अपने साहित्य में बड़े सहज ढंग से व्यक्त किया है। जिसमें न केवल नारी जीवन संघर्ष ही प्रतिबिंबित है बल्कि उसके समाधान का दिशा संकेत भी है।

- **परिशिष्ट -1**

सिम्मी हर्षिता : व्यक्तित्व एवं साहित्यिक अवदान'

यह परिशिष्ट सिम्मी हर्षिता के जीवन-परिचय और साहित्यिक अवदान पर आधारित होने के कारण यह हमें एक ऐसे धरातल पर ले जाता है, जहाँ पर रचना का उत्स छिपा है। किसी भी कृति के अध्ययन के उपरांत कृतिकार के बारे में जो जिज्ञासा स्वाभाविक रूप से पाठकों के मन में उपजती है, उसी का शमन इस अध्याय में हुआ है। उनके जीवन व साहित्य से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने अपने जीवन में बहुत से उतार चढ़ाव देखे। सिम्मी जी का जन्म 29 नवंबर 1940 को मध्यवर्गीय परिवार में पंजाब के रावलपिंड़ी के निकट देवी गाँव में हुआ था। जो अब यह पाकिस्तान का एक हिस्सा है। पिता के स्थानातरंण वाली नौकरी के कारण उन्हें भारत के विभिन्न भागों से जुड़ने का अवसर मिला। अंत में वे स्थायी रूप से दिल्ली वे निवास करने लगीं। काफी समय तक उन्होंने दिल्ली में अध्यापन कार्य किया। अपने व्यवसाय में कोई विशेष महत्त्वाकांक्षा न होते के कारण वे वहीं बस गईं। उनकी अदम्य इच्छाशक्ति एवं सुदृढ़ आत्मशक्ति ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। वे आजीवन अपने अध्ययन, अध्यापन व लेखन में व्यस्त रहीं तभी उनके जीवन की विषम से विषम परिस्थिति में उन्होंने अंतहीन संघर्ष किया और उसी का साक्षी है उनका साहित्य। सिम्मी जी का साहित्य उनके निजि अनुभवों का प्रतिबिम्ब है जो बड़ी सरलता और सहजता से अभिव्यक्त हुई है। उसमें कहीं कोई आडम्बर नहीं।

अपनी टाँगों के तीन बड़े-बड़े ऑपरेशन होने के बाबजूद भी उन्होंने कलम रूपी तलवार को अपने हाथों से अलग नहीं किया। सादा जीवन, अंतर्मुखी व्यक्तित्त्व किसी

विशेष ख्याति के लिए लालायित न दिखने वाली सिम्मी जी अपने जीवन के हर मोड़ पर संघर्ष करती, अपने छोटे से कमरे में शब्दों के साथ अंत तक जीती रही। उन्होंने स्वयं के भोगे अनुभवों को अपने साहित्य में वाणी देकर उसे सशक्त रूप से पाठकों के मध्य रखकर उन्हें सोचने को मज़बूर किया। इस परिशिष्ट -1 में उनके संपूर्ण कथा-साहित्य और उसके लिए लभ्य पुरस्कार का ब्यौरा दिया गया है।

- **परिशिष्ट -2**

  सिम्मी हर्षिता से साक्षात्कार में प्रयुक्त प्रश्नावली

  इस परिशिष्ट में सिम्मी हर्षिता से दिल्ली में मुलाकात के दौरान उनसे पूछे गए प्रश्नों व उनके द्वारा प्राप्त उत्तरों का संक्षिप्त विवरण है ।

- **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

  प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सिम्मी जी के उपन्यास व कहानी संग्रह, आलोचनात्मक ग्रंथ, पत्र पत्रिअकाएँ व शब्दकोश की सामग्रियों की सहायता ली गई। जैसे-

आधार ग्रंथ

कहानी संग्रह

1. कमरे में बंद आभास, सिम्मी हर्षिता, लिपि प्रकाशन, दिल्ली 1975
2. धराशायी, सिम्मी हर्षिता, अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली 1980
3. तैतीस कहानियाँ, सिम्मी हर्षिता, अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली 1980
4. बजारन हवा, सिम्मी हर्षिता, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2000
5. तरह की बातें, सिम्मी हर्षिता, रेमाधव पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड 2007
6. प्रेम संबंधों की कहानियाँ, सिम्मी हर्षिता नमन प्रकाशन, दिल्ली 2009
7. सिम्मी हर्षिता की लंबी कहानियाँ, सिम्मी हर्षिता, नमन प्रकाशन, दिल्ली 2014
8. सिम्मी हर्षिता चुनी हुई कहानियाँ, सिम्मी हर्षिता, अमन प्रकाशन, कानपुर 2015
9. सिम्मी हर्षिता की लोकप्रिय कहानियाँ, सिम्मी हर्षिता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
10. 'सूर्यास्त से पहले' 2004 साहित्य **की** द्वैमासिक पत्रिका अक्षरा में प्रकाशित कहानी

उपन्यास

1. संबंधों के किनारे, सिम्मी हर्षिता, अभिव्यंजना प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1984
2. यातना शिविर सिम्मी हर्षिता, अभिव्यंजना प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1990
3. रंगशाला, सिम्मी हर्षिता, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 2003
4. जलतरंग, सिम्मी हर्षिता, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010
5. पंचकोण, सिम्मी हर्षिता, ग्रंथ अकादमी, नयी दिल्ली, 2018

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरविंद जैन, औरत होने की सजा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006
2. अंजु दुआ जैमिनी, चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में संघर्ष और संचेतना, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016
3. गीताश्री, स्त्री आकांक्षा के मानचित्र, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014
4. गोपाल राय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016
5. डॉ. अनुभूति, नारी-समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्रथम संस्करण : 2013
6. डॉ. अमरनाथ, नारी का मुक्ति-संघर्ष, रेमाधव पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण : 2007
7. डॉ. उषा रानी, मृणाल पाण्डे के साहित्य में युग बोध, संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014
8. डॉ. गीता गुप्त, कुछ विचार कुछ प्रश्न, रजनी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014
9. डॉ. कल्पना किरण पाटोले, महिला उपन्यासकार पारिवारिक जीवन के बदलते संदर्भ, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2010
10. डॉ. पं. पशुराम पवार, सर्वेश्वर दयाल स्क्सेना की कहानियों में सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2008

11. डॉ. प्रीत अरोड़ा, मृदुला गर्ग और नारी विमर्श, सुमेधा बोक्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण : 2015

12. डॉ. भारती शेलके, साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2006

13. डॉ. मुक्ता त्यागी, समकालीन महिला उपन्यासकारों में नारी-विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2012

14. डॉ. मीना ढोले, अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास और नारी अस्मिता, अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2014

15. डॉ. मैत्री सिंह, शिवानी और स्त्री का सामाजिक संघर्ष, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2014

16. डॉ. रजत रानी 'मीनू' वंदना, अस्मितामूलक विमर्ष और हिंदी साहित्य, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016

17. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श के विविध सरोकार, आशा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2018

18. डॉ. सीमा सिंह, नारी स्थिति, संघर्ष और चुनैतियाँ, कल्पना प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2017

19. डॉ. सुधा बालकृष्णन, नारी अस्तित्व की पहचान, बालकृष्णन, नारी अस्तित्व की पहचान, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013

20. डॉ. सुब्राव नामदेव, रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समस्याएं विविध आयाम, जाधव, साहित्य सागर, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2009

21. डॉ. सैय्यद मेहरून, स्वातंत्रोत्तर हिंदी कहानी में संबंध विघटन और नारी संघर्ष चेतना, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2014

22. तनूजा चौधरी, साठोत्तरी लेखिकाओं का स्त्री विमर्श, बुक पबलिकेशन, लखनऊ, प्रथम संस्करण : 2016

23. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014

24. प्रभा खेतान, अन्या से अन्या वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण, प्रथम संस्करण : 2008

25. प्रभा खेतान, स्त्री : उपेक्षिता, हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा.लि. दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1998
26. प्रमीला के. पी., स्त्री अध्ययन की बुनियाद, राजकलम प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015
27. महादेवी वर्मा, श्रंखला की कड़िया, लोक भारती पेपर बैक्स, इलाहाबाद पहला पेपर बैक संस्करण : 2008
28. मृदुला सिन्हा, मात्र देह नहीं है औरत, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016
29. मैत्रयी पुष्पा, खुली खिड़कियाँ, कमल कुमार का कथा साहित्य, शुभम् प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2020
30. मैत्रयी पुष्पा, सुनो मालिक सुनो, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2010
31. रमणिका गुप्ता, स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014
32. राजकिशोर, स्त्री के लिए जगह, सम्पादक राज किशोर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014
33. राजेन्द्र यादव, आदमी की निगाह में औरत, राजकलम प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013
34. रेखा कस्तवार, अपने होने का अर्थ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2012
35. रोहिणी अग्रवाल, साहित्य की ज़मीन और स्त्री-मन के उच्छ्वास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2010
36. सुशीला टाक भौरे, शिकंजे का दर्द, सुशीला टाक भौरे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014

पत्र-पत्रिकाएँ

1. आज की आलोचना, डॉ. नामवर सिंह, जुलाई-सितंबर 2007
2. हंस, औरत : उत्तर कथा, नवम्बर-दिसंबर 1994
3. नथा पथ - अक्टूबर-दिसंबर 1992
4. साक्षात्कार, मार्च 2005

शब्दकोश

1. डॉ. श्याम बहादुर वर्मा, डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा, प्रभात बृहत हिन्दी शब्दकोश खंड-1
2. डॉ. श्याम बहादुर वर्मा, डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा, प्रभात बृहत हिन्दी शब्दकोश खंड-2
3. सूर्य नारायण उपाध्याय, मानक हिन्दी शब्द कोश, कृष्णकांत दीक्षित
4. रामचंद्र वर्मा, प्रामाणिक हिंदी कोश

❖ ❖ ❖

This document was created with the Win2PDF “print to PDF” printer available at
http://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

http://www.win2pdf.com/purchase/